WITWAVES
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
Vol-2 Issue-1
(International Peer-Reviewed E-Journal)
(January 2025)

मनरेगा मजदूरों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन (सागर जिले के विशेष संदर्भ में)

ज्योति शाह
शोधार्थी
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य मनरेगा मजदूरों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन करना है। विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का आकलन करने से अन्य विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। इस हेतु शोधार्थी ने शोध के मुख्य उद्देश्य में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन करने हेतु निर्धारित शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण में शैक्षिक अभिरूचि उपकरण का प्रयोग किया है। इसका प्रशासन उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सागर जिले से 200 विद्यार्थियों पर किया गया। प्रमुख सम्प्राप्तियों में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है। ऑकड़ों के सकलन हेतु शैक्षिक अभिरूचि का मापन डॉ एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन, एवं टी-मान, क्रान्तिक अनुपात मान, सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दावली

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, शैक्षिक अभिरूचि, मनरेगा मजदूर आदि।

प्रस्तावना

वर्तमान दौर सूचना क्रांति का दौर में है। इस दौर में संदेशों और सूचनाओं का तेज गति से आदान प्रदान किया जा रहा है। इस दौर में विद्यार्थियों से लेकर अभिभावकों तक में शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ा है। सरकार भी लगातार प्रयास कर रही है, कि कि कोई भी बच्चा शिक्षा से अछूता नहीं रहे। इन प्रयासों के कारण ही शिक्षा के प्रति जागरूकता में वृद्धि हो रही है। हालांकि इस जागरूकता के बीच में एक नयी दुविधा ने जन्म लिया है। वर्तमान दौर में अभिभावक और विद्यार्थी दोनों असमंजस की स्थिति में है। अभिभावक अपने बच्चों से शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कर सरकारी नौकरी में जाने का सपना देख रहे है और विद्यार्थी में अभिभावकों की उम्मीदों को पूरा करने के कारण तनाव का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या से यह सवाल

खड़ा होता है, कि कुछ ही विद्यार्थी ही अच्छा प्रदर्शन क्यों कर पाते है, सभी विद्यार्थियों में यह समानता क्यों नहीं होती है। इसके अलावा इस समस्या को कैसे दूर किया जा रहा है। क्या विद्यार्थियों के प्रदर्शन को सुधारा नहीं जा सकता है। सुधार की इस प्रवृत्ति को अपनाने से ही शिक्षा के उद्देश्यों को सार्थक किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों की शैक्षणिक अभिरूचि को जानकर उनमें सुधार की दिशा में किये जाने वाले प्रयासों की खोज करना ही है। यही वजह है, कि प्रस्तुत शोध अध्ययन समातीन होने का बोध भी कराता है। मनुष्य के जीवन में अभिरूचि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब यह अभिरूचि विद्यार्थियों से सम्बन्धित हो तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में इनका महत्त्व बढ़ जाता है। अधिगम उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु विद्यार्थियों को अधिगम के लिए प्रेरित करना अति आवश्यक होता है। विद्यार्थी किसी कार्य को तभी सीख सकते है जब उनमें उस कार्य के प्रति रूचि हो और यह रूचि प्रेरणा से ही संभव है।

वर्तमान में प्राथमिक स्तर के शिक्षको की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिरूचि के संदर्भ में यदि देखा जाए तो विद्यार्थियों की परिस्थितियों के अनुसार किसी न किसी विषय के प्रति रूचि अवश्य बन जाती है लेकिन विषय चयन के समय विद्यार्थी की रूचि क्षमता आदि का ध्यान न रखकर कुछ मामलों में उन पर अन्य विषय थोप दिया जाता है। ऐसी स्थिति में उसकी शिक्षा चौपट हो जाती है। इस शोध कार्य के माध्यम से विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिरूचि को जानकर ऐसी समस्याओं से बचा जा सकेगा एवं विद्यार्थी अपना अमूल्य योगदान राष्ट्र को दे सकेंगे। अध्ययन की प्रभावशीलता का पता शैक्षिक अभिरूचि से ही चलता है। अत छात्र-छात्राओं के अध्ययन को प्रभावशाली बनाने के लिए छात्र-छात्राओं में शैक्षिक रूचि को विकसित किया जाना चाहिए।

इस तर्क यह भी है, कि लगभग प्रत्येक विद्यार्थी में किसी न किसी विषय या क्षेत्र में अभिरूचि अवश्य होती है, लेकिन विषय चयन या क्षेत्र चयन को लेकर दुविधा या सभी विषयों को एक साथ पढ़ाने की प्रवृत्ति से भी विद्यार्थियों को शिक्षा के प्रति मोहभंग हो जाता है। इसका अर्थ यह है, कि विद्यार्थी की रूचि, क्षमता आदि का ध्यान न रखकर कुछ मामलों में उन पर अरूचि वाले विषयों को जबरन पढ़ाना होता है। प्रस्तुत अध्ययन के दौरान इन कारणों को जानने का प्रयास किया गया है, कि विद्यार्थियों में माध्यमिक स्तर पर ही उनकी शैक्षिक अभिरूचि के कारणों को जानने का प्रयास किया जाये, ताकि ड्राप आउट की समस्या से बचा जा सके। अभिरूचि को परिभाषिक करते हुए मर्फी ने लिखा है, कि- अभिरुचियों उद्देश्यों से जुड़े अनुबंधित

उडीपक होते हैं. जी. वातावरण की वाछित वस्तुओं, पदार्थों, क्रियाओं व मनुष्यों के गुणों के प्रति पसंद एवं नापसंद के रूप में अभिव्यक्ति होते हैं।

इस प्रकार से कहा जा सकता है, कि अभिरुचि एक प्रेरणा-शक्ति है,जो व्यक्ति को कुछ करने या किसी वस्तु अथवा पदार्थ की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है। अभिरुचियों के संबंध वातावरण की वस्तुओं व पदार्थों से होता है तथा वंशानुक्रम से संबंधित कारक अभिरुचियों को प्रभावित करते है। अभिरुचि व्यक्ति को सीखने में आने वाले अवरोधों को दूर करने में सहायता करती है। इसलिए थकान और असफलता की स्थिति में प्रतिरोधक शक्ति का कार्य करती है। शैक्षिक अभिरूचि चर के सन्दर्भ में पूर्व में हुए शोध का मुख्य लक्ष्य इस प्रकार से था जैसे अध्ययन आदते, मानसिक योग्यता, विद्यार्थियों के ध्यान की एकाग्रता से संबंधित पूर्व शोध कार्य हुए हैं। विद्यार्थियों में वातावरण (सरकारी- गैर सरकारी) के अनुसार शैक्षिक अभिरूचि तथा इसके संबंध में अनेकों प्रकार की गतिविधियों जो कक्षागत एवं अध्ययन के लिए सम्पन्न करता है। विद्यार्थियों के लिए परिवार के अभिभावकों का सहयोग एवं प्रेरणा के साथ-साथ उसके शैक्षिक रूचि की भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य शैक्षिक अभिरूचि के प्रभाव की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसके माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा सकेगी कि एक विद्यार्थी की शैक्षिक अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारक कौन-कौन से है जिससे कि अन्य विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में वृद्धि करने तथा उत्तम शैक्षिक अभिरूचि के निर्माण हेतु सुझावों का प्रस्तुतिकरण किया जा सकते।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सागर जिले के मनरेगा मजदूरों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक अभिरूचि का अध्ययन करना।
2. मनरेगा मजदूरों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली बाधाओं का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन के लिये निम्न परिकल्पनायें निर्धारित की गयी है।

1. सागर जिले के मनरेगा मजदूरों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक अभिरूचि के बीच में सार्थक अंतर नहीं है।

2. सागर जिले के मनरेगा मजदूरों के माध्यमिक स्तर के बालकों की शैक्षणिक अभिरूचि के बीच में सार्थक अंतर नहीं है।
3. सागर जिले के मनरेगा मजदूरों की बालिकाओं की शैक्षणिक अभिरूचि के बीच में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन मध्यप्रदेश राज्य के सागर जिले में पूरा किया गया है। सागर जिले में कार्यरत मनरेगा मजदूरों के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि इसका यह अभिप्राय है, कि हमें निश्चित चयन विधि पर विश्वास करना है यही यादृच्छिक कहलाती है जो बहुत बड़े समूह या जनसख्या को बिना किसी पक्षपात के उपलब्ध करा सके।

शोध की विधि एवं प्रक्रियाएं

शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने प्रस्तुत अनुसंधान में आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण शैक्षिक अभिरूचि का मापन डॉ एस. पी. कुलश्रेष्ठ का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि तथा मानकीकृत उपकरण का चयनित विद्यार्थियों पर प्रशासन करना एक महत्वपूर्ण सोपान है। इस हेतु सागर जिले के मनरेगा मजदूरों की सूची ग्रामीण विकास विभाग से प्राप्त कर उन मजदूरों से व्यक्तिगत संपर्क कर किया गया है। इस प्रकार उपकरण की सहायता से प्रदत्तों एवं सूचनाओं को एकत्रित किया गया तथा उन्हें व्यवस्थित, वर्गीकृत व सारणीबद्ध किया गया।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण के बाद स्पष्ट है, कि मनरेगा मजदूरों के बालक और बालिकाओं में बालक की शिक्षा की प्रति अभिरूचि का स्तर, बालिकाओं की तुलना में ठीक है। बालिकाओं की शिक्षा को लेकर जागरूक होने की आवश्यकता है, ताकि लड़कियों को भी लड़कों की बराबरी के लिये तैयार किया जा सके। इसके अलावा समाज का समग्र रूप से विकास तभी संभव है, जब शिक्षा का स्तर दोनों वर्गो के बीच में बराबर हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अस्थाना, विपिन (1994) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
2. अग्रवाल, ईश्वर प्रकाश एवं अनिता, (1995) बाल विकास एवं शैक्षिक क्रियाएं, नई दिल्ली. आर्य बुक डिपो,करोलबाग ।
3. अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सूरेश (2001) शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी के आधार, जयपुर, 23 चौडा रास्ता
4. आचार्य, पं. शर्मा श्रीराम (1995) सस्करण। भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व, मथुरा, अखण्ड ज्योति संस्थान, प्रथम
5. आचार्य, पं. शर्मा श्रीराम (1996) शिक्षा एवं विद्या, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, प्रथम सस्करण।
6. कपिल एच के (2004) अनुसंधान विधियाँ, आगरा, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, 4230, कचहरी घाट।
7. गुप्ता, एम.एल. एवं शर्मा डी.डी (1997) भारतीय समाज, आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स।
8. खान, ए.आर. (2005) जीवन कौशल शिक्षा, अजमेर, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड।
9. गुप्त. नत्थूलाल (2000) मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नई दिल्ली, नमन प्रकाशन
10. गौड, अनिता (2006) बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे, नई दिल्ली, राज पाकेट बुक्स